जलवायु एवं मृदा

श्योनाक के पौधे की वृद्धि हेतु रेतीली–दोमट उपजाऊ मृदा उत्तम मानी गई है, यद्यपि मध्यम से गहरी काली मिट्टी में भी इसे सफलतापूर्वक लगाया जा सकता है।

प्रवर्धन सामग्री: बीज

पौधशाला

पौधशाला (नर्सरी) में पौध तैयार करने के लिए श्योनाक के पुराने वृक्षों से फरवरी–मार्च माह में फलियों के चटकने के पूर्व उन्हे तोडकर उनसे परिपक्व बीज प्राप्त किए जाते हैं। बीजों को नर्सरी में सीधे थैलियों में बोया जा सकता है। मिट्टी तथा एफ.वाई.एम. (FYM) का 2:1 अनुपात में मिश्रण तैयार कर उसे थैलियों में भर कर थैलियो को बीज बुवाई हेतु पहले से तैयार रखते हैं। बोने से पूर्व बीजों को 12 घंटे तक पानी में भिगोकर रखने से लगभग 80–90 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त हो जाता है। बुबाई हेतु मार्च का उत्तरार्ध सबसे उपयुक्त समय है। नर्सरी में थैलियों की आवश्यकतानुसार सिंचाई कर उनकी मिट्टी को हमेशा थोड़ा नम रखना चाहिए।

क्षेत्र तैयारी - मानसून के पूर्व खेत की अच्छी तरह से जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा तथा खरपतवार मुक्त कर लेना चाहिए। जुताई के समय खेत में प्रति हेक्टेयर 20 टन गोबर खाद भी मिट्टी मे मिलाने से पौधो की वृद्धि दर अच्छी होती है।

प्रत्यारोपण - नर्सरी में तैयार पौधों को खेत मे मानसून आगमन के पश्चात 0.75 मी. x 1 मी. अन्तराल पर प्रत्यारोपित किया जा सकता है।

निदाई-गुड़ाई - वर्ष में दो बार निदाई–गुड़ाई करनी चाहिए। पहली निदाई–गुड़ाई अगस्त के पूर्वार्ध मे तथा द्वितीय निदाई–गुड़ाई वर्षाकाल की समाप्ति के तत्काल पश्चात की जा सकती है।

सिंचाई - रोपित पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। ग्रीष्मकाल में 7 से 10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई आवश्यक है।

रोपण

रोपण के प्रथम वर्ष में श्योनाक के साथ अल्प समय में तैयार होने वाले शाकीय प्रजातियों यथा, कालमेघ का अन्तःरोपण कर अतिरिक्त फसल भी ली जा सकती है। रोपण के पश्चात सितम्बर माह में मृत पौधों को बदलने का कार्य करना चाहिए।

कटाई (विदोहन)

एक से तीन वर्ष पुराने पौधो की जड़ो का विदोहन वृहद् पंचमूल हेतु किया जा सकता है, यद्यपि 6 वर्ष पुराने पौधों से अधिक उत्पादन मिलता है। विदोहन का

उपयुक्त समय अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य है। विदोहन के पूर्व खेत में हल्की सिंचाई करने से विदोहन में आसानी होती है।

कटाई उपरान्त प्रबन्धन (Post Harvest Management)

विदोहन उपरान्त जड़ों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट कर उन्हे छीलकर छाल अलग कर छाया मे सुखाना चाहिए, जब तक कि उनमे आर्द्रता प्रतिशत 12% तक न रह जाये। तत्पश्चात इन्हे आर्द्रता रोधी थैलों में भरकर भण्डारित करना चाहिए। औसतन प्रति हेक्टेयर 10 क्विटल जड़ (शुष्क भार) प्राप्त होना पाया गया है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

पादप कार्यिकी विभाग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

श्योनाक

Oroxylum indicum (L.) Benth ex. Kurtz.

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

श्योनाक

***Oroxylum indicum* (L.) Benth ex. Kurtz.**

कुल	:	बिग्नोनिएसी (Bignoniaceae)
संस्कृत नाम	:	दीर्घवृन्त, भूतवृक्ष, शल्लक, शोण, भल्लूक, पूति वृक्ष, मण्डूकपर्ण, शूरण, पत्रोर्ण, कट्वंग, शुकनासा, पृथुशिम्बा, टिंटुक, मयूरजंघा, वटुक
हिन्दी नाम	:	सोनापाठा, कुल्फा, टेन्टू
अंग्रेजी नाम	:	इण्डियन ट्रम्पट ट्री (Indiantrumpettree)
आयुर्वेदिक नाम	:	श्योनाक, अरालू
उपयोगी भाग	:	जड़, छाल, फल, पत्तियाँ, बीज

श्योनाक के विभिन्न पादपांगों का उपयोग प्रमुखता से आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी, चीनी तथा अनेक परम्परागत चिकित्सा प्रणालियों मे प्राचीन काल से होता आ रहा है। आयुर्वेद मे इस वृक्ष की जड़ 'दशमूल' एवं 'वृहद् पंचमूल' का एक प्रमुख एवं अनिवार्य घटक है।

रसायनिक घटक

इस वृक्ष के विभिन्न पादपांगों (पत्तियों, जड़, छाल, काष्ठ, फल, बीज, इत्यादि) में अनेक अल्केलॉयड्स, फ्लेवेनॉयड्स, टर्पेनॉयड्स, कैरोटेनॉयड्स तथा टैनिन्स इत्यादि प्रमुख पादप रसायन है।

श्योनाक के विभिन्न पादपांगों में अनेक रोग निवारक गुण प्रदान करती है। इसमे कफ–वात शामक, कफ निस्सारक, आमवातरोधी, प्रतिउपचायक, रोगाणुरोधी, जीवाणुरोधी, रक्तशोधक, ज्वरहर्ता, कृमिघ्न, शोधन, व्रणरोधक, ग्राही, वेदनाहर्ता, कामोद्दीपक, बलकारक, स्तम्भक, पाचक, रोचक,उदर सक्रियतावर्धक, विरेचक, मूत्रल, वातानुलोमक, स्वेदजनक तक यकृतरक्षक तथा कैसररोधी गुण विद्यमान है। आयुर्वेद में इसके गुण निम्नानुसार वर्णित किए गए हैं।

रस – तिक्त, कषाय, मधुर; **गुण** लघु, रूक्ष; **वीर्य** उष्ण, विपाक – कटु, कर्म – कफ, वातं

उपयोग

इसके विभिन्न पादपांगों, विशेष रूप से जड़, का उपयोग अनेक व्याधियों, यथा विषम ज्वर, मलेरिया, श्वांस रोग, दमा, एलर्जी, नासारोग, निमोनिया, खाँसी, गले मे खराश, फेफड़ों में खराबी, मंदाग्नि, बदहजमी, अतिसार, खूनी पेचिश, पेट में सूजन, जलोदर, संधिवात, आमवात, कर्णशूल, मुँह के छाले, पीलिया, हैपेटाइटिस, उपदंश, प्रसूतिजन्य दुर्बलता, चर्मरोगों, कैंसर, इत्यादि के उपचार में किया जाता है। घावों में पड़ गये कीड़ों तथा पशुओं के पेट के कीड़ों को निकालने में भी इसका उपयोग किया जाता है।

कई आयुर्वेदिक औषधियों, यथा दशमूलारिष्ट, अमृतारिष्ट, धन्वंतरि घृत, चित्रक हरीतिकी, च्यवनप्राश, धन्वंतरि तैलम्, धन्वंतरिष्टम् इत्यादि का भी यह एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रयोग होता है। औषधीय उपयोगों के अलावा श्योनाक के अन्य गैर औषधीय उपयोग भी हैं। विशिष्ट आकार एवं आकृति के कारण श्योनाक को एक शोभादार वृक्ष के रूप में भी लगाया जाता है। इसकी पत्तियाँ, फल तथा तना खाने के काम मे भी आते है। ऐसी मान्यता भी है कि इसके बीजों की मालायें तथा मूर्तियाँ बना कर घर की छत से टॉगने पर प्रेतवाधाओं से रक्षा होती है।

वितरण

भारतीय उपमहाद्वीप, चीन के दक्षिणी भाग, दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों, यथा मलयेशिया, लाओस, कम्बोडिया, वियतनाम, थाईलैण्ड तथा म्यांमार मे यह वृक्ष प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। भारत में शुष्क पश्चिमी अंचलों को छोड़कर अन्य लगभग सभी प्रदेशों मे समुद्रतल से 1000 मीटर तक की ऊँचाई वाले गर्म तथा नम क्षेत्रों में यह पाया जाता है, यद्यपि अब यह वृक्ष 'दुर्लभ, लुप्तप्राय एवं संकटापन्न' प्रजातियों की श्रेणी में आ चुका है।

आकारिकी

श्योनाक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। सामान्यतः इसकी ऊँचाई 7 से 12 मीटर तक होती है परन्तु अनुकूल परिस्थितियों में इसके वृक्ष 18मीटर तक की ऊँचाई प्राप्त कर सकते हैं। इस वृक्ष की छाल अन्दर से पीले–सुनहरे रंग की परन्तु बाहर से भूरे–धूसर रंग की होती है।

समस्त द्विबीजपत्री वृक्ष प्रजातियों में श्योनाक की पत्तियाँ सबसे लम्बी होती हैं। उनके डंठल की लम्बाई तो दो मीटर तक हो सकती है। ये डंठल सूखने के पश्चात जनवरी माह में झड़ कर वृक्ष के आधार पर एकत्र हो जाते है, जो कि रात्रि मे हड्डियों के ढेर जैसे प्रतीत होते हैं।

पत्तियों में 2–4 अलिंद (pinnae) हो सकती हैं तथा प्रत्येक अलिंद में 3–5 पत्रक (leaflets) होते है, जो विपरीत क्रम में व्यवस्थित होते हैं। इन पत्रकों की लम्बाई 6–12 से.मी. तथा चौड़ाई 4–9 से.मी. होती है। ये पत्रक अंडाकार, बाहरी छोर पर नुकीले एवं किनारियों पर लहरदार होते है। पत्रनाल पर छोटे–छोटे दाने होते है।

इस वृक्ष में पुष्पन जून से अगस्त के मध्य होता है। पुष्प रात में खिलते हैं। ये द्विलिंगी, बृहदाकार, मांसल एवं दुर्गन्धयुक्त होते है। ये बाहर से रक्ताभ–बैगनी रंग के तथा अन्दर से पीले–गुलाबी रंग के होते है जो सीधी, लगभग 10 से.मी. लम्बी मंजरियों में व्यवस्थित रहते है। पुष्पों मे प्राकृतिक परागण प्रायः चमगादड़ों के माध्यम से होता है।

इस वृक्ष मे फलन दिसम्बर से मार्च के मध्य होता है। फल सामान्यतया 30 से 90 से.मी. लम्बे (कभी–कभी 1.5 मी. तक लम्बे), 5 से 10 से.मी. चौड़े, चपटे, काष्ठीय, दोनो किनारों पर थोडे मुड़े हुए तथा नुकीले कैपसूल होते है, जो कि वृक्ष की नग्न शाखाओं से लटके हुए किसी बड़े पक्षी के डैनों अथवा तलवारों जैसे दिखते है।

फलों के अन्दर बहुत से पतले, 5.6 से.मी. लम्बे, पंखदार तथा कागजी बीज होते हैं। लगभग 3 वर्ष की आयु में श्योनाक के वृक्ष मे पुष्पन तथा फलन प्रारम्भ हो जाता है। प्रथम फलन में ही अंकुरणक्षमतायुक्त बीज उत्पन्न होने लगते हैं। तीन से पाँच माह में बीज परिपक्व हो जाते हैं।